कीमती पन्ने

6

(उत्प्रेरक कहानी)

एक लड़का था। उसका नाम नमन था। नमन अपने माता-पिता और दादाजी के साथ रहता था। नमन का मन पढ़ाई में कम और खेलकूद में ज्यादा लगता था। हर समय उछलने-कूदने और शैतानी करने में उसे बड़ा मजा आता था। कॉपी के पन्ने फाड़ना तो उसकी आदत थी। वह कॉपियों से पन्ने फाड़-फाड़कर कूड़ेदान में फेंक देता था। घर में सभी लोग उसकी इस आदत से परेशान थे। वे उसे समझाते कि कॉपी से पन्ने नहीं फाड़ने चाहिए। परंतु नमन तो चिकना घड़ा था। वह किसी की बात नहीं सुनता था। सभी सोच रहे थे कि नमन को कैसे समझाया जाए।

एक दिन जब नमन स्कूल से घर आया तो उसने देखा कि दादाजी ने कूड़ेदान का कचरा अखबार पर फैला रखा है। वे उस कचरे में से कुछ सामान बीन-बीनकर अलग कर रहे थे। नमन चकित रह गया। उसके मन में कई *सवाल* आए। उसने दादाजी से पूछना चाहा। परंतु ठिठककर रुक गया और *कौतूहलवश* अलमारी के पीछे छिपकर देखने लगा। दादाजी ने पहले कागज उठाकर ठीक किए। फिर ऑलपिन और स्टेपलर पिन से बचे हुए टुकड़े भी अलग कर लिए।

नमन सोचने लगा कि आखिर दादाजी इन *व्यर्थ* की चीजों का क्या करने वाले हैं। तभी माँ ने आवाज लगाई– "नमन, जल्दी से हाथ-मुँह धो लो। खाना तैयार है।"

"अच्छा माँ" — यह कहकर नमन हाथ-मुँह धोने चला गया।

कुछ ही देर में दादाजी और नमन भोजन करने लगे। भोजन करके दादाजी अपने कमरे में चले गए। परंतु नमन की नजर तो *सिर्फ* दादाजी पर थी। उसने जल्दी से भोजन किया और दादाजी के पीछे-पीछे उनके कमरे में गया। वहाँ दादाजी पुरानी कॉपियों के फटे-पुराने पन्नों को कैंची से काटकर सही आकार दे रहे थे। तभी नमन के मुँह से निकला– "अरे वाह! यह तो नई कॉपी बन गई।" दादाजी नमन की आवाज सुनकर मुसकुराए। बोले– "हाँ, नमन बेटा! बची-खुची चीजों को भी *उपयोग* में लाया जा सकता है।"

"सच दादाजी!" –कहकर नमन *विस्मय* से दादाजी की ओर देखने लगा। "परंतु दादाजी आप इन स्टेपलर पिन और ऑलपिनों से क्या करेंगे"? "बेटा, ये स्टेपलर पिन और ऑलपिन कॉपी बनाने के काम आएँगी।" यह कहकर दादाजी ने दस-बारह कॉपियाँ बनाईं। नमन बोला– "दादाजी, आप इन कॉपियों का क्या करेंगे?" दादाजी बोले– "बेटा, हमारे देश में ऐसे बहुत से बच्चे हैं जिनके पास पढ़ने के लिए पुस्तकें और कॉपियाँ नहीं हैं। वे पढ़ना चाहते हैं परंतु धन के *अभाव* के कारण पुस्तकें और कॉपियाँ नहीं खरीद पाते। नमन, तुम रोज कॉपियों से पन्ने फाड़कर कूड़ेदान में डाल देते हो। देखो, उन्हीं पन्नों से मैंने ये कॉपियाँ बना ली हैं।"

फिर दादाजी नमन को लेकर गरीब बस्ती में गए। वहाँ बच्चे दादाजी की प्रतीक्षा कर रहे थे। दादाजी के पहुँचते ही सभी बच्चों ने 'दादाजी आ गए, दादाजी आ गए' कहकर हाथ ऊपर कर दिए। दादाजी ने

भी बच्चों को थैले में से कॉपियाँ निकालकर दीं। कॉपियाँ लेकर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। नमन अब अपनी गलती समझ चुका था। वह बोला– "दादाजी, मुझे माफ कर दीजिए। मैं आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगा। अपनी पुरानी किताबें और कॉपियाँ भी सँभाल कर रखूँगा, जो इन बच्चों के काम आ सकें।"

शब्द-अर्थ

सवाल – प्रश्न *(question)*,
कौतूहलवश – जानने की इच्छा *(excitement)*,
सिर्फ – केवल *(only)*,
विस्मय – हैरानी *(perplexity)*,
ठिठकना – संकोच, हिचकिचाना *(hesitate)*,
व्यर्थ – बेकार *(waste)*,
उपयोग – काम में आना *(useful)*,
अभाव – कमी *(shortage)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

शैतान	पन्ने	कूड़ेदान	ऑलपिन	कैंची
कौतूहलवश	पुस्तकें	कॉपियाँ	सँभाल	प्रतीक्षा
बस्ती	व्यर्थ	उपयोग	विस्मय	

2 निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) नमन का मन किस चीज में ज्यादा लगता था?

(ख) नमन को क्या करने में बड़ा मजा आता था?

(ग) घर के सभी लोग नमन की कौन-सी आदत से परेशान थे?

(घ) दादाजी ने फटे-पुराने पन्नों का क्या किया?

(ङ) दादाजी नमन को लेकर कहाँ गए?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) दादाजी ने कूड़ेदान का कचरा कहाँ फैला रखा था?

☐ पार्क में ☐ बड़े कूड़ेदान में ☐ अखबार पर

(ख) नमन की नजर किस पर थी?

☐ कूड़े पर ☐ दादाजी पर ☐ खाने पर

(ग) बस्ती में दादाजी की प्रतीक्षा कौन कर रहा था?

☐ बच्चे ☐ नमन ☐ माँ

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

पुस्तकें, कॉपियाँ, कौतूहलवश, खेलकूद, आदत, कॉपियाँ

(क) नमन का मन ..... में ज्यादा लगता था।

(ख) घर के सभी लोग उसकी इस ..... से परेशान थे।

(ग) नमन ..... अलमारी के पीछे से छिपकर सब देख रहा था।

(घ) हमारे देश में ऐसे बहुत से बच्चे हैं जिनके पास पढ़ने के लिए ..... और ..... नहीं हैं।

(ङ) दादाजी ने बच्चों को थैले में से निकालकर ..... दीं।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) नमन को कॉपियाँ फाड़ने में बड़ा मजा आता था। ☐

(ख) नमन विस्मय से दादाजी की ओर देखने लगा। ☐

(ग) दादाजी ने भी सारी कॉपियाँ फाड़ दीं। ☐

(घ) दादाजी नमन को लेकर गरीब बस्ती में गए। ☐

(ङ) अंत में नमन ने दादाजी से माफी नहीं माँगी। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) नमन ने स्कूल से आकर क्या देखा?

(ख) नमन दादाजी के पीछे-पीछे क्यों गया?

(ग) दादाजी कमरे में क्या कर रहे थे?

(घ) दादाजी नमन को गरीब बस्ती में क्यों ले गए?

(ङ) दादाजी ने नमन को क्या समझाया?

भाषा-ज्ञान

1. इन वाक्यों में सही सर्वनाम शब्द चुनकर लिखिए–

(क) भोजन करके दादाजी ..... कमरे में चले गए। (उस/उन्हें/अपने)

(ख) ..... मन में कई सवाल आए। (मैं/उसके/तू)

(ग) ..... आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगा। (मैं/उसे/तुम)

(घ) ..... इन कॉपियों का क्या करेंगे? (वह/आप/उसका)

(ङ) दादाजी ..... माफ कर दीजिए। (मुझे/मेरा/अपना)

2. नीचे कुछ शब्द-युग्म आपस में मिल गए हैं; उन्हें सही जगह पर लिखिए–

चाय-हाथ	अलग-अमीर	पिता-वाना	उछलने-वाय
बची-बड़े	धीरे-माता	दिन-धीरे	अलग-वोटी
मुँह-खुची	खाना-रात	रोटी-गरीब	बड़े-कूदने

एक जैसे	मिलते-जुलते	विपरीतार्थक	सार्थक-निरर्थक
धीरे-धीरे	बची-खुची	दिन-रात	रोटी-वोटी
.....	.....	.....	.....

3. नीचे दिए गए शब्दों के वचन बदलिए–

(क) पुस्तक – पुस्तकें (ख) कितनब – .....

(ग) पन्ना — ..... (घ) कॉपी — .....

(ङ) कमरा — ..... (च) बस्ती — .....

(छ) पैसा — ..... (ज) खुशी — .....

4. रंगीन शब्दों के विलोम शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए–

(क) महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत हुई और कौरवों की ..... ।

(ख) सूर्य पूरब में उदय होता है जबकि पश्चिम में ..... ।

(ग) हमें सदा सच बोलना चाहिए ..... नहीं।

(घ) हर मनुष्य में गुण भी होते हैं और ..... भी।

(ङ) कक्षा में अध्यापिका ने प्रश्न पूछे और बच्चों ने ..... दिए।

5. कुछ शब्द बोलने और सुनने में लगभग एक जैसे लगते हैं पर उनका अर्थ अलग होता है। इन्हें समश्रुति भिन्नार्थक कहते हैं। जैसे–

(क) कुल - वंश - कृष्ण जी यदुवंशी कुल से पैदा हुए।

(ख) कूल - किनारा - हमेशा तैराकी कूल पर ही करनी चाहिए।

- **नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

(क) दिन — ....

दीन — ....

(ख) मन — ....

मान — ....

(ग) समान — ....

सामान — ....

क्रियात्मक गतिविधि

- **ऐसी बहुत-सी संस्थाएँ हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों की मदद करती हैं। इंटरनेट से उन संस्थाओं की जानकारी एकत्रित करके एक परियोजना तैयार कीजिए।**